E-Content for student of Patliputra University Patna Bihar

subject -Hindi Hons

Course-BA H part-2 paper-3

Topic-सुमित्रानंदन पंत सम्पूर्णता के कवि हैं। इस कथन की पुष्टि करें।

प्रस्तुतकर्ता-डॉ प्रफुल्ल कुमार,एसोसिएट प्रोफेसर,आर आर एस कॉलेज मोकामा,पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना।

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने छायावाद को गुरुता, गंभीरता एवं नवीनता प्रदान की है।उसने प्रगतिवादी काव्यधारा को विकसित करके उसके अग्रदूत होने का गौरव प्राप्त किया है। पंत जी के समस्त काव्य का अनुशीलन करने के पश्चात स्पष्ट होता है कि उन्होंने छायावाद के उन्मुक्त नील गगन में अपनी आंखें खोली।प्रकृति माधुरी पर मुक्त होकर कल्पना की ऊँची उड़ान भरी।छायावाद के गगन से नीचे आकर यथार्थ की भूमि पर प्रगतिवाद के गीत गाए।इसके पश्चात मानवता के मंगलमय उन्नयन में लग गए।पंत जी का दृष्टिकोण हमेशा विश्लेषणात्मक और मूल्यपरक रहा है। पल्लव की भूमिका से लेकर रश्मिबंध आदि सारे संग्रहों की भूमिका में उनका दृष्टिकोण हमेशा व्याख्यापरक,मूल्यपरक और अध्ययनशील दिखाई देता है।पंत ने पल्लव की भूमिका में कविता को परिपूर्ण क्षणों की वाणी कहा है।समय की यह परिपूर्णता कवि की निजी आंतरिक परिपूर्णता से बांधी गई है।यह परिपूर्ण क्षण अपना संपूर्ण भावात्मक क्षमता के साथ-साथ कवि के काव्य चिंतन के साथ निरंतर विकसित होते गए हैं। उन्होंने अपनी चेतना के सारे स्तरों को अपनी परिपूर्णता में आत्मसात कर लिया है। उनकी सौंदर्य चेतना,बौद्धिक चेतना, भू-चेतना आदि सभी एक दूसरे को अतिक्रमण करती हैं फिर भी कुछ निर्धारित सीमाओं के साथ इन्हें प्रस्तुत किया जा सकता है ।

सौंदर्य चेतना काल- वीणा, ग्रंथि और गुंजन की रचनाएं भाषा,भाव, शब्द,शिल्प,अंतर उद्बोधन सभी दृश्यों से बाहरी एवं भीतरी दोनों रूप से सौंदर्य की खोज है।इस कोशिश में प्रकृति प्रेम और आत्मउद्बोधन उपादान बने हैं। नौका विहार की पंक्तियों को देखा जाय तो संध्या का एक वर्णनात्मक चित्र उपस्थित होता है। इसमें द्विअर्थी संयोजन है,जो पंत जी ने छायावादी काव्य को पहली बार दिया है।इस काल की कविताएं अपने आप में विशिष्ट है।इन्हें अंतरंगता की कविता कहना चाहिए।सौंदर्य चेतना से संयुक्त इस कालखंड में भाषा और शिल्प नयापन लेकर उपस्थित हुआ है।पंत जी ने पहली बार भाषा और शब्दों को वाह्य से अंदर की ओर मोड़ने का काम किया।अर्थ को अंदर की ओर मोड़कर कविता को पहली बार अमूर्त उपमान, प्रस्तुत विधान और प्रयोगों को सर्वथा एक नया आयाम दिया है।अंदर की ओर लौटने की प्रक्रिया में शब्द स्वयं मंजकर कोमल एवं चिकने हो गए हैं।साथ ही हिन्दी की संपूर्ण शब्द सत्ता और भाषा को एक नया अर्थ संस्कार भी मिला है।अनेक विशेषताएं पंत की काव्य रचना के प्रथम काल को ही उत्कृष्ट बना देती है।पंत जी ने संवेदना एवं अनुभवों को भी चुन-चुन कर प्रयोग किया है। परिवर्तन कविता में देखा जाए-

अहे निष्ठुर परिवर्तन,

तुम्हारा ही तांडव नर्तन

विश्व का अरुण विवर्तन

बौद्धिकचेतना-

रश्मिबंध की भूमिका में कवि पंत का कहना है कि अपने भीतर मुझे अधिक नहीं मिला। अतः उन्होंने शुद्ध सौंदर्य चेतना के काव्य से बौद्धिक चेतना की काव्य भूमि में प्रवेश किया।पंत जी की इस कालखंड की कविताएं पुरातन की समाप्ति की और विनाश की पृष्ठभूमि पर नव निर्माण का संदेश देती हैं।युग की वास्तविक कला से पुष्ट कवि के प्रेरणा स्रोत का यह परिणाम है।पंत जी का कहना है कि मेरी प्रेरणा के स्रोत निसंदेह मेरे भीतर रहे हैं,जिन्हें युग की वास्तविकता ने खींच कर समृद्ध बनाया है।वह स्वयं को निश्चलता और पवित्रता प्रतीक बना बैठे हैं-

खड़ा द्वार पर लाठी टेके

वह जीवन का बूढ़ा पंजर

सिमटी उसकी सिकुड़ी चमड़ी

हिलती हड्डी के ढांचे पर।

अथवा

पिछले पैरों के बल उठ

जैसे कोई चल रहा जानवर

पैशाचिक सा कुछ दुखों से

मनुज गया शायद उसमें मर ।

स्वर्ण किरण,स्वर्ण धूलि,अतिमा में बौद्धिक चेतना से ऊपर उठकर एक सूक्ष्म अति मानवीय चेतना को ग्रहण की गई है। यह समन्वय,सार्थकता और निर्माण की कविता है। अनुभव का प्रसार यहां पहले की अपेक्षा बहुत अधिक है-

खेतों में फैला है श्यामल

धूल भरा मैला सा आंचल

गंगा-जमुना में आंसू जल

मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी

भारत माता ग्रामवासिनी।

हो या

अ: धरती कितना देती है ।

कवि की रचना क्षमता और उपलब्धि की दिशाएं स्पष्ट होने लगी है। काव्य उपलब्धि की इसी पृष्ठभूमि पर लोकायतन की रचना हुई है।

भू चेतना- पंतजी की रचना शीलता के क्रम में उनकी संपूर्ण अंतर मुख और बहिर्मुखी परिणति यहाॅ आकर एक में समाहित हो गई है।सौंदर्य दृष्टि, बौद्धिक चेतना और लोकमंगल की गहरी दृष्टि संयोजित हो गई। एक महान युग दृष्टा के रूप में कवि पंत दिखलाई पड़ते हैं। भागवत काव्य का कथन पूर्ण रूप से यहां प्रतिफल दिखाई पड़ता है-

कविर्मनीषी का कर्तव्य सनातन

जीवन मंगल का करना सुख सर्जन।

लोकायतन में आज का संपूर्ण जीवन प्रयोग धर्मी काव्य के रूप में उपस्थित है।आज की विकासशील मानव सभ्यता का प्रतिनिधित्व कोई अकेला व्यक्तित्व नहीं कर सकता है।अतः प्रयोगधर्मी कवि पंत ने अतीत की आस्था से चलकर भविष्य की प्रीति तक अनेक विचित्रताओं से होता हुआ सर्व व्यापी मंगल भूमि पर प्रतिष्ठित करने का प्रयोग किया है।उन्होंने आस्था जीवन दुख संस्कृति द्वार से होकर ज्ञान तक पहुॅचने का मार्ग बनाया और सम्पूर्णता तक पहुॅचा है।लोकायतन उनके संपूर्ण मानसिक विकास और चिंतन शीलता का एकत्र संकलन है।

भूजन चेतना- भूजन चेतना से मंडित उनके अन्य काव्य संग्रह कला और बूढ़ा चांद,किरण, वीणा,पुरुषोत्तम राम,पौ फटने से पहले, नई ताजगी शांति शालीनता लिए हुए है।मैं जल से ही स्थल पर आया हूॅ (कला और बूढ़ा चांद) तुम मेरे हो हाॅ सचमुच मेरे हो(पौ फटने से पहले) के रचनाकाल को पंत जी महा संक्रांति कहते हैं।यह महा संक्रांति उनकी इस काल की सभी कविताओं में अंदर ही अंदर प्रवाहित होती है। उनकी मंगल कामना लोकोन्मुखी हो गई हैः वह पूर्ण सत्य की ओर अपनी लेखनी मोड़ दिए हैं।सत्य की इसी पूर्णता की साधना सार्वभौमिक शुभेक्षा -

उतरूंगा मैं शुभ्र हिरण्य भुवन सा जग में

नया सांस्कृतिक तंत्र विश्व मानव को देने।

के आधार पर कवि पंत संपूर्णता के कवि हैं। कल्पना के सत्य को ही सबसे बड़ा सत्य मानने वाले कवि अपने वैभवमयी शौन्दर्य चेतना में बौद्धिक चेतना का बीजवपन करके उसे पल्लवित पुष्पित करते हैं तथा मंगल की अंत: कामना से अपने काव्य जगत को सींचते हुए स्वच्छ चेतना की ओर अग्रसर होते हैं।इस प्रकार वर्तमान के फलक पर भविष्य के नव मानव की परिकल्पना करने वाले सुमित्रानंदन पंत सम्पूर्णता के कवि हैं। उनकी काव्य कला उत्तरोत्तर विकसित होती गई है।

*****